Class 10 Subject: hindi(kshitij) Topic-ch.4(देव)

प्रश्न/उत्तर करो।

प्रश्न 3.

'श्री ब्रजदूलह' की संज्ञा किसे प्रदान की गई है?

उत्तर:

यह संज्ञा सुन्दर वस्त्राभूषणों से सजे श्रीकृष्ण को प्रदान की गई है।

प्रश्न 4.

रस की लालची और दासी कौन हो गई हैं?

उत्तर:

गोपी की कृष्ण-प्रेम में डूबी आँखें रूप-रस की लालची और उनकी दासी जैसी हो गई हैं।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 5.

श्याम ने किसे झूला झूलने के लिए आमंत्रित किया?

उत्तर:

श्याम ने मिलन के लिए उत्सुक गोपी को झूला झूलने के लिए आमंत्रित किया।

RBSE Class 10 Hindi Chapter 4 लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 6.

नेत्रों को मधुमक्खी के समान क्यों बताया गया है?

उत्तर:

मधुमक्खी को मधु (शहद) से बड़ा प्रेम होता है। उस मधु में यदि वह फंस जाए तो फिर निकल नहीं पाती। पंखों के मधु में सन जाने पर वह उड़ने में असमर्थ हो जाती है। नायिका अथवा गोपी की आँखें भी कृष्ण के मनमोहक रूप से आकर्षित होकर उनके प्रेमरूपी मधु में मग्न हो गई हैं। अब उन्हें प्रेम से इस मधु से विमुख करना उसके बस की बात नहीं रही। इसीलिए वह अपने नेत्रों को मधुमक्खी के समान बता रही है।

Scanned with CamScanner

नायिका के भाग क्यों सो गए?

उत्तर:

एक रात नायिका ने सपने में देखा कि वर्षा का बड़ा सुहावना वातावरण था। झीनी-झीनी बूंदें झर रही थीं। आकाश में घटाएँ उमड़ रही थीं। उसी समय कृष्ण आ गए और उन्होंने नायिका के साथ-साथ झूलने चलने को कहा। यह सुनते ही नायिका भाव-विभोर हो गई किन्तु वह जैसे ही कृष्ण के साथ चलने को उठी, उसकी नींद टूट गई। संपना विलीन हो गया। न वहाँ घन थे न घनश्याम। यह देख नायिका ने अपने भाग्य को धिक्कारा। उस जागने ने उसको भाग्यहीना बना दिया। वह सपने में भी कृष्ण मिलन के सुख से वंचित रह गई।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 8.

जै जग मन्दिर दीपक सुन्दर' से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर:

कवि ने श्रीकृष्ण को 'ब्रज दूलह' बताया है। उनका सुन्दर रूप वस्त्रों और आभूषणों से सुसज्जित है। उनकी यह जग-मग छवि आनन्द का दिव्य प्रकाश बिखेरने वाली है। इसी कारण कवि ने उन्हें 'जग-मन्दिर-दीपक' कहा है। जैसे जलता हुआ दीपक भवन अथवा मन्दिर को प्रकाशित करता है, उसी प्रकार श्रीकृष्ण भी अपने दिव्य सौन्दर्य से सारे जग को प्रकाशित करने वाले हैं। कवि इसी कारण उनकी जय-जयकार कर रहा है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 9.

काव्यांश के आधार पर कृष्ण के सौन्दर्य का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

संकलित छंदों में से प्रथम छंद कवि ने श्रीकृष्ण की दिव्य सौन्दर्यमयी, चित्ताकर्षक छवि को समर्पित किया है। आभूषणों और वस्त्रों ने उनके सौन्दर्य को और अधिक आकर्षक बना दिया है। उनके पैरों में सुन्दर नूपुर बज रहे हैं और कटि में पहनी हुई करधनी के मुँघुरू मधुर ध्वनि से कानों में अमृत घोल रहे हैं। कृष्ण के श्यामवर्ण शरीर पर पीताम्बर बहुत ही सुशोभित हो रहा है। वक्ष पर उन्होंने वन-फूलों की माला धारण कर रखी है। उनके सिर पर मुकुट सजा हुआ है। उनके बड़े-बड़े नेत्र अपनी चंचलती से मन को मुग्ध कर रहे हैं। उनकी जादूभरी मंद-मंद मुस्कान उनके मुखरूपी चन्द्रमा से छिटक रही चाँदनी के समान लग रही है। यदि जगत को एक भवन (मन्दिर) मान लिया जाये तो श्रीकृष्ण का परम सौन्दर्यमय स्वरूप उसमें जलते एक उज्ज्वल दीपक के समान है जो उसे दिव्य सौन्दर्य से प्रकाशित कर रहा है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 10.

पठितांश के आधार पर देव की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:

कवि देव की कविता के कलापक्ष और भावपक्ष दोनों ही समृद्ध हैं। उनकी प्रमुख काव्यगत विशेषताएँ निम्नलिखित

भाषा-कवि देव की कविता की भाषा सरस, मधुर, प्रवाहपूर्ण, सरल ब्रजभाषा है। इनकी भाषा में ब्रज क्षेत्र के ठेठ शब्द, संस्कृत के तत्सम शब्द तथा प्राकृत भाषा के प्रयोग भी प्राप्त होते हैं। शब्दों की पुनरुक्ति द्वारा कवि ने भाषा में आकर्षण और चमत्कार उत्पन्न किया है। 'झहरि झहरि' तथा 'घहरि घहरि' ऐसे ही प्रयोग हैं।

काव्य शैली-कवि ने मुक्तक शैली में ही अधिकांश काव्य-रचना की है। देव ने रीतिकालीन आलंकारिक और चमत्कारपूर्ण शैली को भी अपनाया है। शब्द-चित्रों के अंकन में देव परम कुशल हैं। 'पाँयनि नूपुर.....।' तथा 'झहरि-झहरि' छंदों में कवि की इस विशेषता के दर्शन होते हैं।

Scanned with CamScanner

छंद – कवि को कवित्त छंद पर असाधारण अधिकार प्राप्त है। सवैया छंद को भी कवि ने सहजता से अपनाया है।

अलंकार – कवि देव ने अनुप्रास, यमक, श्लेष, रूपक, उपमा आदि अलंकारों को सहज भाव से प्रयोग किया है। 'घहरि घहरि घटा घेरी है' में अनुप्रास, 'जागि वा जगन' में श्लेष, 'जग-मन्दिर' में रूपक, 'मंद हँसी मुख चंद जुन्हाई' में रूपक और उपमा की संयुक्त छटा देव की अलंकारप्रियता के उदाहरण हैं।

रस – देव प्रधानतः श्रृंगार रस के कवि हैं। श्रृंगार रस के संयोग और वियोग, दोनों पक्षों की मार्मिक उपस्थिति देव की कविता में देखी जा सकती है। पाठ्य-पुस्तक में संकलित छंदों में से द्वितीय छंद ' धार में धाय .....' में संयोग श्रृंगार का और 'झहरि-झहरि.....' छंद में वियोग श्रृंगार के हृदयस्पर्शी शब्द-चित्र अंकित हुए हैं।

Scanned with CamScanner